अनुगामी जैन प्राकृत साहित्य

अनुगामी का क्या अर्थ - ① मूल साहित्य के बाद का साहित्य। Original नहीं

② मूल की विशेषता को कायम रखने वाला साहित्य

③ मूल का अनुसरण, अनुगमन करने वाला साहित्य

④ जो साहित्य तीर्थंकर द्वारा नहीं दिया गया जैन आचार्यों द्वारा दिया गया।

⑤ जो साहित्य प्राकृत भाषा में

⑥ जो साहित्य विशुद्ध धार्मिक ही है जिस साहित्य की महत्ता original जैसी ही है।

इसलिए अनुगामी जैन साहित्य कहने का अर्थ है

(i) Post vedic काल के बाद का साहित्य

(ii) तीर्थंकर की देन नहीं, आचार्य की देन

(iii) स्वरूप में विशुद्ध धार्मिक

- स्वरूप में मूलतः मौखिक
- भाषा में वही प्राकृत
- Importance में - Religion, History दोनों में importance,

मूल से कम महत्वपूर्ण।

इसमें दो साहित्य

1. कल्प सूत्र - वेदांग वाला नहीं, यह है जैन साहित्य

पर्युषण
- यह मूल साहित्य न होकर, अनुगामी साहित्य है।
- भाषा प्राकृत है।
- रचनाकाल मौर्यकाल है।
- चौथी शताब्दी से तीसरी शताब्दी B.C के बीच रचा गया।
- इसके रचयिता भद्रबाहु हैं।

कौन भद्रबाहु - वही जो चंद्रगुप्त मौर्य के समकालीन थे।

- जिनके समय में 12 वर्षीय अकाल पड़ा।

— जो जैन धर्म के अंतिम 14 पूर्वास के ज्ञाता थे।
— जो जैन धर्म को विंध्य पार ले आए।
— जो जैन धर्म को महाराष्ट्र, कर्नाटक तक ले गए।
— जो जैन धर्म संघ के अंतिम एकीकृत नेता थे।
— महान विद्वान प्रतिष्ठित आचार्य।
— जिन्होंने चंद्रगुप्त मौर्य को जैन धर्म में सम्मिलित कराया।
— जो अपने साथ चंद्रगुप्त मौर्य को भी अपने साथ कर्नाटक ले गया। चन्द्र पर्वत पर सल्लेखना प्रक्रिया द्वारा निर्वाण तक पहुंचाया। जैनियों का मानना है।
यही है महान भद्रबाहु, जिन्होंने अद्भुत प्राकृत रचना की-

कल्पसूत्र

जिसकी तीन रूपों में महत्व है -
(i) यही वह Book है जिसमें 24 तीर्थंकरों की जीवनियां हैं इसलिए यदि 24 तीर्थंकर को जानना है यही स्रोत है, यद्यपि 1 से 22 तक को ऐतिहासिक नहीं माना जाता।
(ii) जैन धर्म के व्यवस्थित इतिहास बनाने में प्रयोग हो।
(iii) चूंकि यह रचना मौर्य काल में लिखी गई। इसलिए मौर्य के लिए समकालीन है मौर्य के इतिहास निर्माण में इस Book का भी इस्तेमाल हो।
Post vedic में नहीं, मौर्य में

2. नंदीसूत्र

— अनुगामी साहित्य
— जैनियों के बाद का साहित्य

प्राकृत साहित्य, जैन ओरिजनल।
जैन साहित्य, जैनियों की देन, जैनियों का स्रोत।
मौर्यकालीन साहित्य है Post vedic के बाद का साहित्य।
मौर्य के लिए तत्कालीन साहित्य, मौर्य इतिहास बनाने में उपयुक्त
इसका कोई तिथि स्थापित नहीं
यह (4 से 3) शताब्दी ई० पू० के बीच में जैन श्रमण-श्रमणियों की भेंट है।
Gift for world
इस देश के श्रमण-श्रमणी कितनी चीजों को जानते थे, कितने शब्द को जानते थे उन सबका जिक्र इसमें कर दिया गया है
यह Book धार्मिक Book नहीं यह तो जैनियों के शब्दकोश की तरह काम करता है इसलिए इतना जरूरी नहीं है, फकत है
जैन धर्म के इतिहास और मौर्यों के इतिहास बनाने में भी इसका उपयोग है।

यदि Book original है, तो उस पर हर दौर में हर निरीक्षा तैयार होती है। और इसलिए टीका या समीक्षा हर युग में होता रहा है original का उपयोग न, टीका भी original की तरह है और टीका भी
यदि मूल पुस्तक हिंदू धर्म से संबंधित है उस पर किसी ने टीका लिखा, तो उस टीका को टीका भी कहते हैं और भाष्य भी कहते हैं।
यदि मूल पुस्तक जैन धर्म से संबंधित है उस पर टीका लिखा गया, तो उसे
अट्टकथा या अवदानाम और
अर्थ साहित्य कथा।

यदि मूल साहित्य गौण साहित्य है तो उस पर लेखन, टीका को चूर्णिका या निर्युक्ति कहते हैं।

इसलिए निर्युक्ति या चूर्णिका ये दो शब्द ऐसे हैं जिनका संबंध जैन धर्म से है। तीर्थंकर ने दिया अंगबाह्य / आचार्य ने दिया अनुयायी / आगे आने वाले शिष्यगणों ने दिया निर्युक्ति / चूर्णिका सबका अपना-2 महत्व है।